

74

जनवरी-जून, 2018

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN 0974-0066

(अंक-74, जनवरी-जून, 2018)

संरक्षक

प्रो. राघवेन्द्र पी. तिवारी

कुलपति

प्रधान सम्पादक

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

सम्पादक

प्रो. निवेदिता मैत्रा

डॉ. पंकज चतुर्वेदी

डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. छबिल कुमार मेहेर



डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (मध्यप्रदेश) - 470003

दूरभाष : (07582) 264455

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

सम्पादकीय परामर्श मण्डल

- प्रो. वीरेन्द्र मोहन, हिन्दी विभाग
- प्रो. ए.एन. शर्मा, मानवशास्त्र विभाग
- प्रो. पी.पी. सिंह, विधि विभाग
- प्रो. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव, इतिहास विभाग
- डॉ. अनुपमा कौशिक, राजनीतिशास्त्र विभाग

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

अंक-74, जनवरी-जून 2018

ISSN 0974-0066 (पूर्व-समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका)

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

यू.जी.सी. द्वारा मान्य पत्रिकाओं की सूची (प.सं.-48918) में सम्मिलित।

प्रकाशित रचनाओं के अभिमत से डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
या सम्पादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है।

सम्पादकीय पत्र व्यवहार :

मध्य भारती

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर - 470003 (म.प्र.)

दूरभाष : (07582) 264455

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

आवरण : डॉ. छबिल कुमार मेहेर

मुद्रण :

अमन प्रकाशन

कटरा नमक मंडी, सागर (म.प्र.)

सदस्यता शुल्क	आजीवन	प्रति अंक
	रु. 2000/-	रु. 150/-
व्यक्तिगत	रु. 200/-	रु. 4000/-
संस्थागत		

अनुक्रमणिका

भास्कराचार्य रचित गणितीय कृति लीलावती : एक अवलोकन रामप्रसाद	5
आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में छायावाद कामिनी	23
बौद्ध धर्म-दर्शन और मार्क्सवाद के साथ दलित साहित्य का अंतर्सम्बन्ध दीपक सिंह	32
भारतीय ज्ञान परम्परा में कामशास्त्र का इतिहास राघवेन्द्र मिश्र	38
धर्म और विज्ञान का अंतर्विरोध अनिल कुमार तिवारी	59
कमलेश्वर के 'काली आंधी' उपन्यास में स्त्री-विमर्श संजीव कुमार विश्वकर्मा	68
शास्त्रीय संगीत में लोक संगीत के तत्त्व बृजेश मिश्रा	73
गाँधी के राष्ट्रवाद की अवधारणा पंकज सिंह	83
भरहुत की कला में प्रतिबिम्बित लोक जीवन कृष्ण देव पाण्डेय	94
समकालीन समाज-दर्शन और स्वामी विवेकानन्द शैल कुमारी	103
मध्यप्रदेश की संस्कृति में छतरपुर अंचल की भूमिका विशाल विक्रम सिंह	118
एशियाई परिदृश्य और भारत-चीन संबंध नेहा निरंजन	128
'उस जनपद का कवि हूँ' : कविता के सरोकार दुर्गेश वाजपेयी	135
महिला सशक्तीकरण में महिला पुलिस की भूमिका के प्रति महिलाओं का दृष्टिकोण (सागर नगर के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन) विवेक मेहता	146

गाँधी के राष्ट्रवाद की अवधारणा

पंकज सिंह

राष्ट्रवाद एक जटिल बहुआयामी अवधारणा है एवं आधुनिक विचार है, जिसमें अपने राष्ट्र से एक साझी सांप्रदायिक पहचान समावेशित है। यह एक राजनीतिक विचारधारा के रूप में अभिव्यक्त होता है, जो किसी समूह के लिए ऐतिहासिक महत्व वाले किसी क्षेत्र पर सांप्रदायिक स्वायत्तता और कभी-कभी संप्रभुता हासिल करने और बनाए रखने की ओर उन्मुख है। एक व्यक्ति की राष्ट्र के भीतर सदस्यता और संबंधित राष्ट्रवाद का उसका समर्थन, उसके सहगामी राष्ट्रीय पहचान द्वारा चित्रित होता है।

राष्ट्रवाद को समझने के लिये दो बड़े आयामों को समझना जरूरी है। इसी समय राज्य नाम की आधारणा का विकास हुआ तथा राजनीतिक रूप से अपनी एक अलग पहचान स्थापित की। राष्ट्रवाद के उदय के फलस्वरूप राजनीतिक सरोकारों का केन्द्र बिंदु राष्ट्र-राज्य (Nation-state) में निहित हो गया। धीरे-धीरे एक विचार ने अपनी एक व्यापक पहचान स्थापित की। विश्व स्तर पर राष्ट्रवाद के प्रचार-प्रसार से गैर आधुनिक समाजों का यूरोपीयकरण तथा आधुनिकीकरण हुआ। राष्ट्रवाद के उदय के साथ अनेक नये सिद्धांतों का उदय हुआ जैसे-संप्रभुता की उत्पत्ति, शासितों के सक्रिय सहयोग से शासन का सिद्धांत, धर्मनिरपेक्षता, धार्मिक या जातीय सामाजिक मानसिकता का विघटन। साथ-साथ शहरीकरण, औद्योगिकीकरण तथा संचार सेवाओं का प्रचार-प्रसार।

राष्ट्रवाद एक राजनीतिक विचार है जो आधुनिक विचारों के साथ आधुनिक समाज की स्थापना करता है। यह बहुसंख्यक लोगों असीम श्रद्धा, विश्वास व राष्ट्र के प्रति भक्ति है। यह राज्य को केवल राजनीतिक संगठन के रूप भी प्रदान करता है। यूरोपीय राष्ट्रवाद के संदर्भ में सामान्य रूप से यह विचार दिया जाता है कि यह जैविक एकता, एक खास क्षेत्रफल एक समान अर्थव्यवस्था, समाज भाषा, राष्ट्र के प्रति समान सोच, सांस्कृतिक समानता जैसे तत्वों को समाहित करने वाला है।

राष्ट्रवाद की विवेचना प्रसिद्ध इतिहासकार ई.एच.कार के अनुसार - एक सार्वभौम एवं सर्वमान्य सरकार की व्यवस्था जो वर्तमान या भूत की वास्तविकता हो, एक निश्चित क्षेत्रफल तथा इसके सभी व्यक्तिगत सदस्यों के बीच आपसी तालमेल हो। एक निश्चित सीमा हो। दूसरे राष्ट्रों व गैर राष्ट्रीय समूहों से भिन्न कुछ ऐसे मौलिक तत्व हो, एक राष्ट्र को अलग पहचान दे। व्यक्तिगत सदस्यों के हित सामूहिक हो। जन समूह में राष्ट्र के प्रति भावनात्मक झुकाव हो।

यह सत्य है कि राष्ट्रवाद के ये सारे तत्व तीसरे विश्व के देशों (Third World Countries) के राष्ट्रवाद के रूप में अपनी जगह नहीं बना सके इसके अतिरिक्त राष्ट्रवाद को उन राज्यों के साथ जोड़कर देखा